chapter 4

भारतीय शास्त्रीय संगीत का भविष्य

भारतीय संगीत की वर्तमान स्थिति पर हम पिछले अध्याय 'भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति' में विचार कर चुके हैं। अब उसके आधार पर हम उसके भविष्य के विषय में कुछ अनुमान तो लगा ही सकते हैं। मेरे विचार से हमारे भूतकाल से हमें क्या प्राप्त हुआ है? उसके आधार पर हम अपने वर्तमान में क्या विचार, प्रयत्न-प्रयास कर रहे हैं या नहीं या वे हमारे प्रयत्न अथवा प्रयास सही दिशा में अग्रसर हैं या नहीं इसी पर हमारे भविष्य की नींव आधारित होती है। हमारी वैचारिकता व प्रयासों के तहत यह नींव सफलता व असफलता दोनों की ही आधारशिला हो सकती है। जन्मपत्री भी हमारी इसी वैचारिकता व प्रयासों का गणित ही है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एक अभिजात्य कला है और हमारी साँस्कृतिक धरोहर है जिसे कई सौ वर्षों से हमारे पूर्वज संजोते चले आ रहे हैं; शिक्षा की 'गुरु-शिष्य-पद्धति' द्वारा। इतिहास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि हमारी इस धरोहर को एक बार मुगल शासन व्यवस्था के स्थापित होने व उसके अंत व अंग्रेज़ी शासकों के काल में आज की तरह संक्रमण और समस्याओं का सामना करना पड़ा था। उस वक्त इस अस्थिरता के पीछे दोष यह था कि यह कला केवल राजदरबारों की सम्पत्ति बनकर रह गयी थी और कुछ गिने-चुने व्यक्ति इसे अपने अधिकार की वस्तु मान बैठे थे; साधारण जन से इसका नाता समाप्त सा ही हो गया था। इन कुछ लोगों ने कला पर अपना प्रभुत्व जमाये रखने के लिये उन्होंने इस कला पर वैचित्र्य व श्रृंगारिकता का जामा इस प्रकार पहना दिया था कि साधारण जन इसे अपने लिये अछूत कला समझने लगे थे। जो कुछ थोड़े लोग यदि इस ओर आकर्षित होते भी थे तो संगीत कला के इन ठेकेदारों ने इस कला की शिक्षा को इतना दुर्लभ बना दिया था कि

इस क्षेत्र की कठिनाइयों को देखकर ही वे पलायन कर जायें। इस प्रकार का वातावरण बनते-बनते उस वक्त भी यही स्थिति उत्पन्न हो गयी थी कि कुछ समय बाद यह कला समाप्त हो जायेगी; अर्थात उसका भविष्य अंधकारमय हो रहा था।

इस कला के उस अंधकारमय युग से उसका उद्धार करने के लिये विष्णुद्वय का अवतार हुआ। उन्होंने अपनी वैचारिकता के आधार पर अपने भगीरथ प्रयासों द्वारा इस कला को नवजीवन प्रदान किया; आज उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही यह कला सर्वजन के लिये सुलभ हो सकी है। आज इस कला की शिक्षा इसके अनगिनत शिक्षा-केन्द्र अपने-अपने तरीके से प्रदान कर रहे हैं। परंतु आज से ५०-६० वर्षों पहले उन्होंने जो ढ़ाँचा खड़ा कर दिया, जो मार्ग दिखा दिया उसी पर हम चल रहे हैं। उस ढाँचे की सुदृढ़ता के लिये हमने आगे कुछ नहीं किया। यह विचार नहीं किया गया कि समय के अनुसार परिस्थितियाँ बदलती हैं और उन बदली हुई परिस्थितियों व बदले वातावरण हुये के अनुसार परिवर्तन करना आवश्यक है। आज संगीत कला में वैचारिकता वह भी सही दिशा में की गयी वैचारिकता के आधार पर उसकी सुदृढ़ता के लिये किये जाने वाले प्रयत्नों की कमी फलस्वरूप आज फिर संगीत कला समस्याओं व संक्रमण के काल से गुज़र रही है। आज इसका प्रसार पहले से बहुत अधिक हो गया है पर फैलाव की ओर ध्यान देते हुये उसकी गहराई भी बनी रहे इसका हमें कोई ध्यान नहीं रहा। इससे जुड़ी समस्याओं पर कोई विचार ही नहीं हो रहे हैं यदि हो भी रहे हैं यदि हो भी रहे हैं तो व्यक्तिगत रूप से; उस पर किसी प्रकार के सुधारात्मक उपायों के लिये किसी प्रकार के प्रयास या प्रयत्न नहीं हो रहे हैं। यही कारण है कि आज फिर हमारी संगीत कला अनेक समस्याओं से जूझते हुये जीवित रहने का प्रयास कर रही है। इन

समस्याओं पर हम पिछले अध्याय, 'भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति' में प्रकाश डाल चुके हैं। इस विवेचना के अंतर्गत हम पाते हैं कि इस कला की शिक्षा-पद्धति में ही अनेक दोष उत्पन्न हो गये हैं। जैसे विद्यालयीन स्तर से संगीत शिक्षा का कोई प्रावधान न होना, प्रवेश परीक्षा का अभाव, एकदम महाविद्यालयीन तथा विश्वविद्यालयीन स्तर पर इस कला की शिक्षा का प्रारंभ, पाठ्यक्रम का दोषों से परिपूर्ण होना, संगीत-शिक्षा में कला साधना के उपयुक्त समय का न रखा जाना, परीक्षा-पद्धति का अनेक दोषों से परिपूर्ण होना। आज शिक्षा (संगीत) से संबंधित इन दोषों के कारण हमारी संगीत कला का स्तर प्रभावित होता है।

घरानेदार-शिक्षा-पद्धति या गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति में उत्पन्न दोषों को दूर करने के लिये संस्थागत-शिक्षा-पद्धति से संगीत-शिक्षा प्रदान किये जाने की विधि को अपनाया गया। परंतु संस्थागत-शिक्षा-पद्धति जिन गुणों से गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति परिपूर्ण थी उससे वंचित हो जाने के कारण फिर दोषयुक्त हो गयी है। इसका सीधा प्रभाव संगीत कला की उत्कृष्टता पर पड़ता है।

जो साधना पहले संगीत साधकों में देखी जाती थी जिसके प्रभाव से वे इस कला को जीवन्तता प्रदान करते थे उसका आज के संगीत साधकों में पूर्णतः अभाव पाया जाता है इसका कारण चाहे साधकों का अपना दृष्टिकोण हो, परिस्थितियों जन्य समय का अभाव हो या जो भी हो पर उसका प्रभाव भी हमारी संगीत कला के गिरते स्तर पर पड़ रहा है।

जीविकोपार्जन की समस्या भी इस कला की राह की एक बड़ी बाधा है। पहले इस कला के साधकों को राज्याश्रय अथवा गुरु का आश्रय मिल जाता था पर वर्तमान युग में यह परंपरा समाप्त हो गयी है। और इस कला के क्षेत्र में कोई खास जीविकोपार्जन के अवसर

दिखाई नहीं पड़ते हैं। इससे भी इस कला के प्रति उदासीनता का होना स्वाभाविक है यदि उदासीनता न हो तो जीविकोपार्जन के अन्य साधन अपनाकर इसकी साधना करना अवश्य असंभव है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत कला के स्तर के ह्रास में जिन तथ्यों की भूमिका है उनमें इस कला पर पाश्चात्य संगीत का पड़ने वाला प्रभाव भी है ऐसा माना जाता है। 'भारतीय शास्त्रीय संगीत की वर्तमान परिस्थितियाँ" इस अध्याय के अंतर्गत विवेचना के बाद कुछ प्रसिद्ध संगीत क्षेत्र के विद्वज्जनों का मत जानने के बाद निष्कर्ष यह निकला है कि इसका कोई विशेष प्रभाव इस कला पर नहीं पड़ रहा है। क्योंकि इन दोनों विधाओं की प्रकृति ही भिन्न है। और इस भिन्नता के कारण दोनों ही कलायें एक दूसरे पर ऐसा कोई प्रभाव डालनें में समर्थ नहीं हैं जिससे वे अपनी-अपनी परंपरा से विमुख हो जायें।

'शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति' अध्याय के अंतर्गत छठवें अध्याय में हम विवेचना द्वारा द्वारा तथा संगीत जगत के कुछ प्रसिद्ध संगीतज्ञों तथा विद्वानों के मतों को जानने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि शास्त्रीय-संगीत पर आधारित फिल्म संगीत ही अधिक जनप्रिय है। आज ३० सालों में फिल्म संगीत की जो धारा प्रचलन में आयी है उसका प्रभाव जनमानस पर क्षणिक ही देखा जाता है; जिसके समाप्त होने में अधिक समय नहीं लगता। अपितु फिल्म संगीत की इस धारा के ही कारण आज लोकरुचि फिल्म संगीत से विमुख होकर शास्त्रीय संगीत पर आधारित गज़ल विधा की ओर तेजी से मुड़ती दिखाई दे रही है। अतः फिल्म संगीत शास्त्रीय संगीत को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा रहा है। यदि फिल्म संगीत को शास्त्रीय संगीत का आधार प्रदान किया जाय तो यह प्रयास संगीत की दोनों विधाओं को लोकप्रिय बनाने में सहायक होगा।

उपरोक्त तथ्य आज शास्त्रीय संगीत कला के संदर्भ में संगीत कला से परिचित, उसमें दक्ष, उसके विद्वानों के लिये परिचर्चा का विषय हैं। और विवेचना के पश्चात् उसका निष्कर्ष यही निकला है कि यह कला बुरी तरह से ह्रास की ओर अग्रसर हो रही है। यदि कुछ समय तक स्थिति यही रही इन समस्याओं के समाधान का मार्ग नहीं निकाला गया तो इस कला का भविष्य अंधकारमय ही होगा और इस कला के लुप्त होने में अधिक समय नहीं लगेगा।

शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति को देखते हुये भविष्य के विषय में हम यही अनुमान लगा सकते हैं। परंतु भविष्य, हमें वर्तमान में भूतकाल से जो प्राप्त हुआ है उसके संवर्धन व परिवर्धन के लिये हम क्या कर रहे हैं इस पर बहुत कुछ निर्भर करता है। प्रसिद्ध चिन्तक विद्वान श्री वामन हरि देशपांडे भी संगीत जगत में फैल रही समस्याओं व संक्रमण की स्थिति पर चिन्ताग्रस्त हैं - "उनके अनुसार संगीत के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वे इस संबंध में कुछ करें।" उनका मत इस स्थिति के संबंध में इस प्रकार है - "फिर भी अवस्था उतनी अंधकारपूर्ण अथवा अपेक्षा भंग करने वाली नहीं है। बिलकुल आज की घटनाओं को सामने रखकर उचित मार्गदर्शन का लाभ हो तो उन्नति के नये दालान खुलने में मदद मिल सकती है। आज के जमाने में भी हानिकारक सिद्ध होने वाली बातों पर भी, कुछ सुधारात्मक उपायों द्वारा कुछ हद तक काबू किया जा सकता है।"[1] करीब-करीब संगीत जगत के सभी विद्वज्जनों की आज यही दृष्टि है।

श्रीमती सुमति मुटाटकर -

के अनुसार कुछ समस्याओं पर

---

[1] सं.क.वि., १९१०, पृ. ३९०,

विचार करके सुधार करने पर कोई कारण नहीं कि शास्त्रीय संगीत का भविष्य उज्जवल न हो प्रतिभा तो हर युग में रहती है . आज भी है।[1]

श्री बिमलेन्दु मुखर्जी —

के कथनानुसार आज शास्त्रीय संगीत के लिये जितना सोचा जा रहा है उसे देखते हुये लगता है यदि इसके संस्थागत शिक्षा पद्धति वाले विभाग में कुछ सुधार कर दिये जायें तो भविष्य अत्यंत ही उज्जवल होगा। क्योंकि आज जितने व्यक्ति इस क्षेत्र में उच्चकोटि के स्तर तक पहुँच रहे हैं वे स्वयं के व्यक्तिगत प्रयासों के फलस्वरूप बढ़ रहे हैं। यदि उचित आधार संस्थागत-शिक्षा-पद्धति अपने विद्यार्थियों को प्रदान करेगी तब और अधिक प्रतिभाओं के सामने आने की आशा की जा सकती है।[2]

श्री महादेव प्रसाद मिश्र —

भविष्य में शास्त्रीय संगीत समाप्त तो नहीं होगा पर वह ओज नहीं रहेगा।[3]

कु. कमल ताई ताँबे —

भविष्य में कभी भी यह संगीत समाप्त तो नहीं होगा। पर इसके स्वरूप में अवश्य कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।[4]

श्री छन्नूलाल मिश्र — शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतीकरण पर

---

1 श्रीमती सुमति मुटाटकर, भेंटवार्ता, दिल्ली, २३.२.८८
२ श्री विमलेन्दु मुखर्जी, " , खैरागढ़, २६.९.९०
३ श्री महादेव प्रसाद मिश्र, " , बनारस, २८.८.८९
४ कु. कमल ताई ताँबे , " , बम्बई, १३.१०.८९

विशेष ध्यान देना होगा इससे ही शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार संभव होगा। यदि शब्दों को भावों के आधार पर सजाकर प्रस्तुत किया जाय, लय, ताल के चतुरतापूर्ण प्रयोग के साथ स्वर की साधना हो तो इस ढंग से प्रस्तुत शास्त्रीय संगीत जन-मानस में पसंद किया जायेगा। और इसी पर शास्त्रीय संगीत के भविष्य की उन्नति निर्भर होगी।[1]

श्री वसंत रानडे –

शास्त्रीय संगीत का भविष्य केवल प्रतिभावान और जिज्ञासु विद्यार्थियों के हाथ में सुरक्षित है। ऐसे विद्यार्थी समय-समय पर आगे आते ही रहेंगे।[2]

श्री नारायणराव पटवर्धन –

शास्त्रीय संगीत के विद्यार्थियों के स्तर में गिरावट अवश्य दिखती है परंतु इसके साथ-साथ कई अच्छे कलाकार भी अपने परिश्रम और मार्गदर्शन से उभरकर आ रहे हैं। निराशा की आवश्यकता नहीं है। समस्याओं का निराकरण करके काम करना आवश्यक है। गुरुकुलीन वातावरण शास्त्रीय संगीत के गुणात्मक स्तर की वृद्धि में सहायक होगा।[3]

श्री प्रभाकर कारेकर –

जी के अनुसार शास्त्रीय संगीत का भविष्य अच्छा है। आज कलाकार उत्पन्न नहीं हो रहे हैं। कारेकर जी के अनुसार इसका कारण जीविकोपार्जन की समस्या है।

---

१ श्री छन्नूलाल मिश्र, भेंटवार्ता, बनारस, २८-८-८९
२ श्री वसंत रानडे , " , बड़ौदा, २४-१०-९१
३ श्री नारायणराव पटवर्धन, भेंटवार्ता, बड़ौदा, २४-१०-९१
४ श्री प्रभाकर कारेकर, " , बम्बई, ११-१०-८९

भविष्य में शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार तथा उसकी उन्नति के लिये निम्नलिखित सुधारात्मक उपायों का अपनाया जाना अत्यावश्यक हो गया है।

संस्थागत-शिक्षा-पद्धति में सुधार किये जाने की सबसे प्रमुख आवश्यकता है। संगीत शिक्षा विद्यालय के प्रारंभिक स्तर से उच्चतम स्तर तक जारी करनी पड़ेगी तभी संगीत कला के स्तर में सुधार संभव होगा। पाठ्यक्रम में उचित दिशा में परिवर्तन करते हुये उसमें जीविकोपार्जन की समस्या से संबंधित सुधार करने होंगे। संगीत शिक्षा के लिये उपयुक्त स्थान, संगीत-वाद्यों, संगीत-शिक्षकों की व्यवस्था करनी होगी। एक स्तर के बाद विद्यार्थी को गुरुकुलीन शिक्षा पद्धति द्वारा शिक्षा देने की व्यवस्था करनी होगी। इसके लिये सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को परिवर्तित करना होगा। एक स्तर के बाद कक्षा में छात्रों का प्रवेश के लिये चुनाव योग्यता के आधार पर हो। परीक्षा पद्धति में कठोरता लानी होगी। तब कोई कारण नहीं होगा कि संस्थागत शिक्षा पद्धति भी कलाकारों की जन्मदाता बन सकेगी और शास्त्रीय संगीत के स्तर में भी गुणात्मक सुधार होगा।

इसके पश्चात शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार के लिये उसके प्रस्तुतिकरण की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक होगा। प्रस्तुतिकरण का सीधा प्रभाव जनता पर पड़ता है; इससे जनरुचि विकसित होती है। अतः कलाकार को कला के प्रस्तुतिकरण की ओर विशेष ध्यान देना होगा। कलाकार को कला प्रदर्शन की समय सीमा तब तक ही रखनी चाहिये जब तक प्रदर्शन में माधुर्य व आकर्षण बना रहे, राग चयन पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। कला प्रदर्शन में कला-पक्ष व भाव-पक्ष का समन्वय हो। बंदिशों के चयन पर भी ध्यान देना आवश्यक होगा। इन सब बातों के के साथ संतुलित साथ-संगत भी प्रस्तुतिकरण के विषय में प्रभावी चीज़ है। इन सब बातों के संतुलन से कलाकार

का प्रदर्शन उच्चकोटि का व प्रभावी होगा तथा शास्त्रीय संगीत के गुणात्मक स्तर के सुधार में सहायक होगा तथा कलाकार को भी उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाला होगा।

इसके बाद शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार के लिये शास्त्रीय संगीत का प्रसारण करने वाले प्रचार माध्यमों आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा पत्र-पत्रिकाओं, आदि के उचित प्रयोग की आवश्यकता है। इन प्रचार माध्यमों का प्रयोग इस प्रकार हो कि सभी प्रतिभाओं को इन पर प्रदर्शन के लिये अवसर अपने स्तर के अनुरूप मिल सकें। तथा ये माध्यम अपने स्तर को प्रत्येक कलाकार-वर्ग के अनुरूप बनाये रखें।

फिर शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार के लिये कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया जाय। इसके लिये कला-साधना में लगे कलाकारों को विशेष रूप से संरक्षण व सुविधायें प्रदान की जायें ताकि वे कला-साधना निश्चिन्त होकर कर सकें और आगे बढ़ सकें। प्रस्थापित कलाकारों के समक्ष अनेक अवसर स्वयं ही होते हैं। परंतु उदीयमान कलाकारों को उचित अवसर प्रदान किये जायें ताकि वे आगे आ सकें। फिर कलाकारों को वृद्धावस्था में आवश्यकता पड़ने पर पूर्ण संरक्षण प्रदान किया जाय। ताकि इस क्षेत्र में आने वालों के दिल से असुरक्षा की भावना पूर्णतः समाप्त हो जाय।

उपरोक्त सुधारात्मक उपायों को अपनाने के बाद कोई कारण शेष नहीं रहेगा कि हमारे शास्त्रीय संगीत का भविष्य उज्जवल न हो।